



舜尧 / 解析
王琪 / 绘画

图文双解



舜人失坠



舜人失坠



螳螂捕蝉

中国寓言的人生智慧



鲁班刻凤



张弓争雁



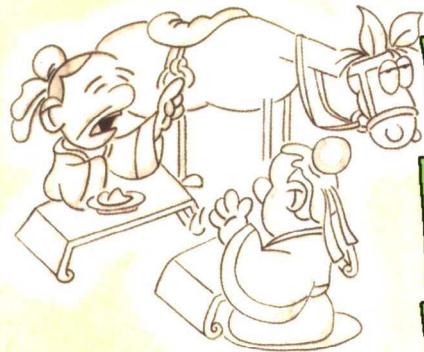
黔驴技穷

长虹出版公司

舜尧 / 编译 解析
王琪 / 绘画

图文双解

中国寓言的人生智慧



图书在版编目(CIP)数据

中国寓言的人生智慧 / 舜尧著 . - 北京 : 长虹出版公司 ,
1998
ISBN 7 - 80063 - 033 - 1

- I. 中…
- II. 舜…
- III. 寓言 - 中国 - 古代 - 选集
- IV. I276. 4

长虹出版公司出版

(北京地安门西大街 40 号 邮政编码:100035)

北京市门头沟区印刷厂印刷 新华书店发行

1999 年 3 月第 1 版 1999 年 3 月第 1 次印刷

开本: 850 × 1168 1/32 印张: 9.75

字数: 150 千字 印数: 1 - 10500 册

定价: 15.80 元

目 录

| | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| 宓子论过 | 1 | | | | | | | | | | | | | |
| 螳螂搏轮 | 2 | | | | | | | | | | | | | |
| 指鹿为马 | 2 | | | | | | | | | | | | | |
| 卞庄子刺虎 | 3 | | | | | | | | | | | | | |
| 齿亡舌存 | 3 | | | | | | | | | | | | | |
| 晏子使楚 | 4 | | | | | | | | | | | | | |
| 衆将东徙 | 5 | | | | | | | | | | | | | |
| 铁棒磨成针 | 6 | | | | | | | | | | | | | |
| 黠鼠 | 6 | | | | | | | | | | | | | |
| 反裘负刍 | 7 | | | | | | | | | | | | | |
| 问麟 | 7 | | | | | | | | | | | | | |
| 对牛弹琴 | 8 | | | | | | | | | | | | | |
| 阿豺折箭 | 9 | | | | | | | | | | | | | |
| 魏王愿不死 | 10 | | | | | | | | | | | | | |
| 穆公失马 | 11 | | | | | | | | | | | | | |
| 荀政猛于虎 | 12 | | | | | | | | | | | | | |
| 嗟来之食 | 13 | | | | | | | | | | | | | |
| 学长生者 | 14 | | | | | | | | | | | | | |
| 截竿入城 | 15 | | | | | | | | | | | | | |
| 以叶障目 | 16 | | | | | | | | | | | | | |
| 人云亦云 | 17 | | | | | | | | | | | | | |
| 汉世老人 | 18 | | | | | | | | | | | | | |
| 某甲命曲 | 19 | | | | | | | | | | | | | |
| 甲见邑宰 | 20 | | | | | | | | | | | | | |
| 弈秋弈败 | 21 | | | | | | | | | | | | | |
| 隶首失算 | 22 | | | | | | | | | | | | | |
| 鲁班刻凤 | 23 | | | | | | | | | | | | | |
| 民始识禹 | 24 | | | | | | | | | | | | | |
| 桓公知士 | 25 | | | | | | | | | | | | | |
| 蜀侯金牛 | 26 | | | | | | | | | | | | | |
| 30 | 29 | 28 | 27 | 26 | 25 | 24 | 23 | 22 | 21 | 20 | 19 | 18 | 17 | 16 |

| | |
|-------|----|
| 二人评玉 | 31 |
| 东莱试诗 | 32 |
| 杯弓蛇影 | 33 |
| 天下无马 | 34 |
| 与狐谋皮 | 35 |
| 画图买马 | 36 |
| 金翅鸟之死 | 37 |
| 群虱相杀 | 38 |
| 猎人学黑 | 39 |
| 蜘蛛之贪 | 40 |
| 哀溺 | 41 |
| 临江之麋 | 42 |
| 永州之鼠 | 43 |
| 得意之虎 | 44 |
| 油翁说箭 | 45 |
| 日喻 | 46 |
| 河豚忘肆 | 47 |
| 乌贼求全 | 48 |
| 再过一遭 | 49 |
| 二叟钓鱼 | 50 |
| 方士大言 | 51 |
| 溺器盛酒 | 52 |
| 大言者缚 | 53 |
| 佯言白马 | 54 |
| 权贵辨鼎 | 55 |
| 越人溺鼠 | 56 |
| 迂儒救火 | 57 |
| 白雁落网 | 58 |
| 古琴高价 | 59 |
| 八哥起哄 | 60 |
| 南人食蛇 | 61 |
| 周人好姣服 | 62 |
| 走虎捐子 | 63 |
| 许金不酬 | 64 |
| 畏影恶迹 | 65 |
| 买椟还珠 | 66 |

| | |
|---|-------|
| 井底之蛙 | 性急之逆 |
| 揠苗助长 | 外科医生 |
| 燕石藏珍 | 凿壁伸脚 |
| 引婴投江 | 固执己见 |
| 掩耳盗铃 | 惊弓之鸟 |
| 群猴觉悟 | 中州之蜗 |
| 狮 皮 | 三猪过河 |
| 赵人患鼠 | 荆人遗弓 |
| 马嘉遇截 | 杞人忧天 |
| 蟪蛄无忘 | 关尹子教射 |
| 荆人畏鬼 | 新妇说事 |
| 以糟为酒 | 精诚所至 |
| 张弓争雁 | 蜀之二僧 |
| 盲人失坠 | 鹦鹉灭火 |
| 来自旧例 | 拙于用大 |
| 螳螂捕蝉 | 不龟手药 |
| 三人搔痒 | 亡湖之鱼 |
| 奴才谀主 | |
| 84 83 82 81 80 79 78 77 76 75 74 73 72 71 70 69 68 67 | |
| 102 101 100 99 98 97 96 95 94 93 92 91 89 88 87 86 85 | |

| | |
|--------|-----|
| 汉阴丈人 | 120 |
| 林回弃璧 | 119 |
| 腾猿处势 | 118 |
| 封人言政 | 117 |
| 庄周借粮 | 116 |
| 儒生盗墓 | 115 |
| 屠龙之术 | 114 |
| 黔驴技穷 | 113 |
| 乌龟训子 | 112 |
| 塞翁失马 | 111 |
| 周人仕数不遇 | 110 |
| 郢人鬻母 | 109 |
| 叶公好龙 | 108 |
| 国宝 | 107 |
| 猴子下棋 | 106 |
| 庄子鼓盆 | 105 |
| 儒仕儒服 | 104 |
| 越人持的 | 103 |

120 119 118 117 116 115 114 113 112 111 110 109 108 107 106 105 104 103

| | |
|------|------|
| 滥竽充数 | 画鬼最易 |
| 郢书燕说 | 自相矛盾 |
| 无列不击 | 无解而解 |
| 取鼠之狗 | 朝三暮四 |
| 薛谭学歌 | 曹商得车 |
| 虚荣 | 宣王好射 |
| 欹满则倾 | 扁鹊治病 |
| 智子疑邻 | 唇亡齿寒 |
| 王寿焚书 | 猴子下棋 |
| 树难去易 | 庄子鼓盆 |
| | 儒仕儒服 |
| | 越人持的 |

138 137 136 135 134 133 132 131 130 129 128 127 126 125 124 123 122 121

| | |
|--------|-----|
| 刻削之道 | 139 |
| 小人辨日 | 139 |
| 疑邻窃斧 | 139 |
| 说客与船夫 | 139 |
| 季子投师 | 139 |
| 楚王好细腰 | 139 |
| 五十步笑百步 | 139 |
| 庄惠论志 | 139 |
| 卫人教女 | 139 |
| 和氏献璧 | 139 |
| 请君入瓮 | 139 |
| 山鸡与凤凰 | 139 |
| 目不见睫 | 139 |
| 美与丑 | 139 |
| 管仲论曲直 | 139 |
| 社鼠 | 139 |
| 宋人酤酒 | 139 |
| 公输削鹄 | 139 |
| 青蛙与鸡 | 159 |
| 所长无用 | 159 |
| 戴高帽 | 159 |
| 树与鹅 | 159 |
| 残缺之人 | 159 |
| 戎夷让衣 | 159 |
| 燕人还国 | 159 |
| 邹忌窥镜 | 159 |
| 狐假虎威 | 159 |
| 曾生杀人 | 159 |
| 曲高和寡 | 159 |
| 分鱼 | 159 |
| 童子拾柴 | 159 |
| 驯养斗鸡 | 159 |
| 曾子杀猪 | 159 |
| 晏子论盗 | 159 |
| 景公放生 | 159 |
| | 158 |
| | 157 |
| | 156 |
| | 155 |
| | 154 |
| | 153 |
| | 152 |
| | 151 |
| | 150 |
| | 149 |
| | 148 |
| | 147 |
| | 146 |
| | 145 |
| | 144 |
| | 143 |
| | 142 |
| | 141 |
| | 140 |

| | |
|------|-----|
| 鲁人报仇 | 175 |
| 儿不畏虎 | 176 |
| 鳌与蚂蚁 | 177 |
| 猴子捞月 | 178 |
| 书蠹 | 179 |
| 卜妻为裤 | 180 |
| 守株待兔 | 181 |
| 郑人买履 | 182 |
| 刻舟求剑 | 183 |
| 南辕北辙 | 184 |
| 不食盗食 | 185 |
| 赴火之蛾 | 186 |
| 得过且过 | 187 |
| 盼望小偷 | 188 |
| 干净刀 | 189 |
| 纪昌学射 | 190 |
| 画蛇添足 | 191 |
| 农夫擅功 | 192 |

192 191 190 189 188 187 186 185 184 183 182 181 180 179 178 177 176 175

| | |
|-------|-----|
| 不宦为富 | 175 |
| 绝蹄而去 | 176 |
| 鹬蚌相争 | 177 |
| 金钩桂饵 | 178 |
| 鸡犬升天 | 179 |
| 不禽不兽 | 180 |
| 无物可取 | 181 |
| 相法不准 | 182 |
| 黑兽伤虎 | 183 |
| 狮猫捕鼠 | 184 |
| 隔年干虱 | 185 |
| 屠夫与狼 | 186 |
| 马价十倍 | 187 |
| 用偷成事 | 188 |
| 性情刚烈 | 189 |
| 吴王恶八哥 | 190 |
| 好誉者 | 191 |
| 半日闲 | 192 |

210 209 208 207 206 205 204 203 202 201 200 199 198 197 196 195 194 193

| | |
|-------|--------|
| 越人遇狗 | 黑白娼妓 |
| 牛尾狸遭嫉 | 海屋添筹 |
| 群蚁萃木 | 矢人好誉 |
| 猫祝鼠寿 | 蜀商三人 |
| 虎化美妇 | 仰慕道学 |
| 冥王受谄 | 糟饼当酒 |
| 人貌猴心 | 誉人自贤 |
| 和尚怜虾 | 单衣更冷 |
| 厚脸皮 | 耸肩而行 |
| 麻雀请宴 | 割股救父 |
| 东食西宿 | 义犬救主 |
| 津人操舟 | 杨布打狗 |
| 宝价十万 | 来年再不偷 |
| 兄弟种田 | 黄公好谦 |
| 和尚待客 | 掣肘 |
| 杀驴乘鸡 | 盗与殴 |
| 娇猴之死 | 好草书而不工 |
| 采石诗 | |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| 228 | 227 | 226 | 225 | 224 | 223 | 222 | 221 | 220 | 219 | 218 | 217 | 216 | 215 | 214 | 213 | 212 | 211 |
| 支公好鹤 | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 246 | 245 | 244 | 243 | 242 | 241 | 240 | 239 | 238 | 237 | 236 | 235 | 234 | 233 | 232 | 231 | 230 | 229 |

| | | | |
|-------|-----|------|-----|
| 玄石好酒 | 264 | 喜获元珠 | 264 |
| 僧在我不在 | 263 | 靶神助阵 | 264 |
| 猩猩好酒 | 262 | 万字万画 | 264 |
| 牵绳盗牛 | 261 | 望洋兴叹 | 264 |
| 骂鸭治恶 | 260 | 秉烛之明 | 264 |
| 马医何辱 | 259 | 婴儿之戏 | 264 |
| 秦巴西放鹿 | 258 | 列子论射 | 264 |
| 矮凳上楼 | 257 | 许由出逃 | 264 |
| 迷糊之人 | 256 | 衣冠禽兽 | 264 |
| 雄鸡断尾 | 255 | 艾子说狗 | 264 |
| 小猫问食 | 254 | 蚂蚁命运 | 264 |
| 万金之患 | 253 | 夫妻之争 | 264 |
| 常羊学射 | 252 | 鹰变斑鳩 | 264 |
| 名誉读书 | 251 | 鹤鸟迁巢 | 264 |
| 丑妇效颦 | 250 | 三人同舍 | 264 |
| 吓死自己 | 249 | 众笑亦笑 | 264 |
| 子罕不受玉 | 248 | 猴肉狗味 | 264 |
| 楚人学齐语 | 247 | 生子作文 | 264 |

| | |
|-------|-----------|
| 对猪论死 | · · · · · |
| 无耻诗人 | · · · · · |
| 蠢夫媚妻 | · · · · · |
| 空中楼阁 | · · · · · |
| 詹何之术 | · · · · · |
| 中道之乱 | · · · · · |
| 孔子说桃 | · · · · · |
| 儒不博弋 | · · · · · |
| 晏子与车夫 | · · · · · |
| 祁奚举贤 | · · · · · |
| 割肉自啖 | · · · · · |
| 汉人煮竹 | · · · · · |
| 以羊换牛 | · · · · · |
| 墨悲丝染 | · · · · · |
| 王子悟竹 | · · · · · |
| 性急之人 | · · · · · |
| 白马过关 | · · · · · |
| 安知鱼乐 | · · · · · |

300 299 298 297 296 295 294 293 292 291 290 289 288 287 286 285 284 283

宓子论过

孔子学生宓(mì)子的朋友介绍一个人去见宓子。那人走后，宓子对朋友说：“你这个朋友有三个不得体：见我就笑，一点也不严肃，显得轻浮；说话不尊称老师，有违师道；初交便无话不说，不遵守尊卑礼节规矩乱来……”朋友解释说：“他望着你笑，是坦荡大器的表现；说话不称老师，是见识通达，不守门户之见；至于初次见面而无所不谈嘛，是不见外讲忠信之举。”对这个人同时同样的言谈举止，却有人认为是品德高尚的君子，有人认为是人格低下的小人，这都是因为个人看问题的立场观点不同呵！

——《齐俗训》



【解析】我们对生活的感受依赖于判断。判断又依赖于我们大脑中无数的概念组成的观念。我们用相同的概念对话，但各自的概念内涵(hán)却各不相同。既然这样，同人同事同为，同时被不同的人认作不同的德行，就是再自然不过的事了。可笑的是，我们经常地妄想消灭这种差别。我们满怀希望地像统一字面概念那样地去统一每一个人对这概念所持有的内涵，然而实践除了证明我们的徒劳之外，几乎再没有其他的结果。



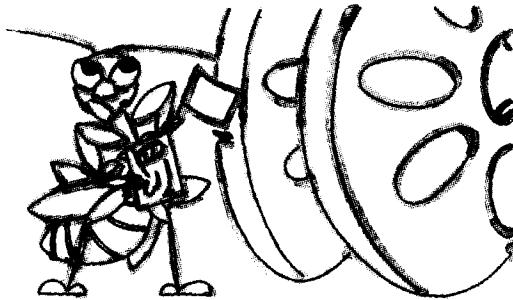
螳螂搏轮

齐庄公外出打猎，见有一只小虫张牙舞爪地要挡他的车轮。齐庄公惊奇，问车夫：“这是什么虫？”

车夫回答他：“这就是平常所说的螳螂。这种虫只知道前进而不知道后退，轻敌妄为不自量力……”

齐庄公不由感叹：“这虫假如是人，一定是世上最勇敢而不怕搏斗的人了！”他叫车夫退车，避开螳螂。

——《人间训》



【解析】螳螂挡车是可笑的。我们笑它的自不量力。齐庄公退车让螳螂也是可笑的。我们笑他的矫情无当。但是，不自量未必就不能成功，就像可笑并非就非得可悲一样。特别是在我们有力而无精神的时候，在无需费力只要意念就能取胜成功的空档——这种机遇我们并不陌生——螳螂的不自量力（抑或就可认作是自信呢！）以及不计后果只进而不知退却的勇猛，便尤其的重要和可贵了。否则，齐庄公避螳螂而行，在后人眼里，就不仅仅是矫情，而是愚蠢了。

指鹿为马

丞相赵高图谋篡(cuàn)夺秦二世的王位。他担心大臣们不听他的指挥，就想法找事试探。他把一只鹿拿来献给二世，并对二世说：“这是一匹马。”

二世笑了，说：“丞相你弄错了吧？怎么把鹿说成是马呢？”二世问左右的大臣们是不是这样。大臣们有的闭口不言；有的说这就是马，讨好赵高；有的说是鹿，赵高就在暗中施计加以陷害。这样一来，群臣都害怕赵高了。

——《秦始皇本纪》



【解析】真理是可爱的。但真理的可爱只是在离我们的利害关系遥远的时候。我们选择谬(miù)误而放弃真理，是因为我们确认坚持真理我们就将受到伤害而选择谬误我们反而受益。这大概应该算是颠倒是非混淆(xiáo)黑白为什么盛行于世、实事求是却寸步难行的一个原因了。



卞庄子刺虎

鲁国勇士卞(biàn)庄子想去刺杀老虎。旅馆里有个孩子劝他说：“两只虎正要吃一条牛。当它们吃得津津有味时就必然争抢，一争抢必然打斗，一打斗必然大的伤小的亡。这时你只须刺杀受伤的那只，就可一举获得刺毙两只老虎的美名。”卞庄子认为这孩子讲得有道理。呆会儿，两只老虎果然打斗起来，大的那只受了伤，小的那只死了。卞庄子只挑受伤的刺杀，一下就获得了刺毙(bì)双虎的功劳。

——《张仪列传》

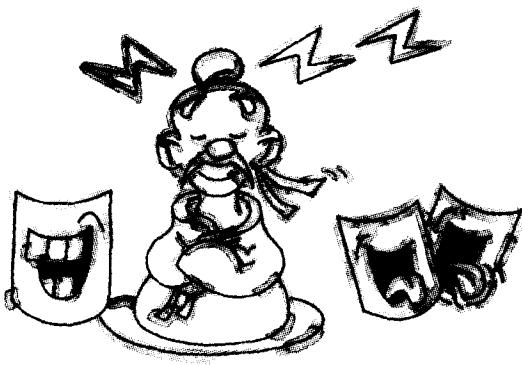


【解析】不劳而获虽然常被我们观念的道德法官提审，但我们却不能不承认，不劳而获是我们人类向往追求的目标——至少从某种意义上来说是这样。以最小的代价获取最大的利益，以至于不劳而获，没有智慧的关照，没有操作的技巧，没有时机的契合，它都不可能成形。事半功倍和事倍功半，词素都一样，只是组合序列发生了变化，结果却成了两个迥(jiǒng)异的词汇。我们的能力何尝不是如此。使的劲都一样，付出的都一样，但结果却是有别的。这不是上帝偏心，而是我们无心——我们常常讲究做人的实在，却忽略了智慧无处不有的道理。

齿亡舌存

常创张开自己的嘴巴给老子看，并问：“我的舌头在吗？”老子回答说：“在。”“我的牙齿在吗？”老子答：“没了！”常创问：“你讲得出这是什么道理吗？”老子说：“这舌头之所以存在，不就是因为它柔软吗？牙齿折了，不就是它太坚硬了吗？”常创哈哈笑道：“你说对了。天下的事情，不都是这样的吗？”

——《说苑·敬慎》



【解析】生活是需要弹性的。只有原则没有弹性的
生活是死板的、沉重的、令人窒息(zhì)的。同样，我们
对生活的态度，也应该除了原则还要有一些弹性。舌
头和牙齿，一个屈顺一个刚直，一个损耗一个留存，就
是因为一个有弹性而一个没有弹性。但是，我们也要
记住：刚强因刚强受损，但刚强也因刚强被人看重。这
和柔软因柔软而受利，但柔软也因柔软而被人看轻是
一个道理。所以，该做牙齿的时候也还得具备些刚强，
该做舌头的时候也还要多一些柔顺。抽掉前提，不问
青红皂白地效法牙齿或舌头，都让人觉得片面得可
笑。